VAISHAL PATLIPUTRA DUGDH UTPADAK SAHKARI SANGH LTD
PATNA DAIRY PROJECT

Feeder Balancing Dairy Complex, Phulwarisharif, Patna – 801505
Phone – 0612-2252553, 2252542, 2251622, Fax-2250325
Email :- vpmu.pur@gmail.com

VPDUSS-SOP-8.5.1.2-01.F02

PDP: PUR: FBD 13925 **Dated: 24.03.2026**

Dear sir,

We are interested in purchasing of the following item. In case you can supply the same, you may send your quotation in sealed cover addressed to the Managing Director address given above superscribing on the top of the envelop quotation for **Clean Milk Production (CMP) Book under NPDD 2024-25** so as to reached us on or before **10.04.2026**.

Suppliers are mentioned our Enquiry nos and date on his quotation or on the top of Envelop necessary.

All rates must be F.O.R. FBD on door delivery basis.

S.No.	Item	Specification	Qty.required
1	Clean Milk Production (CMP) Book as per enclosed specification		1000 nos

Thanking you

Dy. Manager (MM)

Specification of CMP Book
Size: 10.5"x 8.5" (Total - 12 Pages)
Cover – Art paper 300 GSM (Laminated)
Inner page – Art paper 170 GSM
Multicolour printing.
Content enclosed
Final printing subjected to prior Confirmation.

18/03/2026

प्रस्तावना

घर में दूध देनेवाली गाय या भैंस को रखकर दूध सहकारी समिति में देकर अपनी ज़िम्मेदारी ख़तम नहीं होती । अभी हमारा देश दूध उत्पादन में दुनिया में पहले नंबर पर पहुँच गया है । मगर बदलती हुई परिस्थिति में दूध स्वच्छ हो, जल्दी से न बिगड़े, तथा बीमारी न फैलाये, यह ज़रुरी हो गया है । इसी स्वच्छ दूध से अच्छी चीज़ें बनें तो हमें और हमारी डेरी दोनों को फायदा होगा । इसके लिये हम बहुत कुछ कर सकते हैं जैसे कि,

(१) पशु को साफ-सुथरा और निरोगी रखना ।

(२) पशु रखने की जगह साफ-सुथरी रखना ।

(३) उसे साफ पीने का पानी देना ।

(४) दूध दुहने और रखने के लिये स्टेनलेस स्टील के साफ बर्तन का उपयोग करना ।

(५) दूध दुहने से पहले हाथों को साबुन से धोना ।

(६) थन को साफ पानी से धोकर साफ धुले हुए कपड़े से सुखाना ।

(७) दूध दुहने से पहले हर थन से एक-दो धार दूध निकाल कर फेंक देना ।

(८) दूध दुहने वाले साफ-सुथरे और निरोगी इंसान हों, जो बीड़ी, तंबाकू, पान आदि दुहने के समय न उपयोग करे ।

(९) दूध देते पशु को हरा चारा खिलाना ।

(१०) दुहने के बाद थनों को साफ पानी से धोना और फिर जीवाणुनाशक घोल में डुबोना या उन पर जीवाणुनाशक घोल छिड़कना जिससे वे थनैला रोग से बचें ।

(११) समिति तक दूध ढककर जल्दी पहुँचाना ।

(१२) समिति पर दूध को, अगर हो सके तो, ठंडा रखना जिससे वह न बिगड़े ।

अगर इन सब बातों पर हम अमल करें तो हमारे द्वारा समिति को पहुँचाये हुए दूध से हम सबको बहुत फायदा हो सकता है । आइये, हम स्वच्छ दूध उत्पादन के काम में जुट जायें ।

स्वच्छ दूध क्या है?

अगर दूध में कोई हानिकारक जीवाणु, धूल के कण, गोबर, बाल या मक्खी इत्यादि ना हो तो हम उसे स्वच्छ दूध कह सकते हैं। साफ तथा स्वच्छ दूध उत्पादन के लिये कई कारक महत्वपूर्ण होते हैं। जैसे साफ वातावरण, साफ पशुशाला, दूध इकठ्ठा करने के साफ बर्तन, साफ तथा स्वच्छ पशु, दूध दूहने की सही तकनीक, साफ तथा स्वस्थ ग्वाला, उचित पशु आहार व्यवस्था तथा दोहने उपरान्त उचित प्रबन्धन इत्यादि। **

CHANDAN ARA

(क) साफ वातावरण तथा पशुशाला

दुग्ध उत्पादक का कर्तव्य है कि वह यह सुनिश्चित करें कि पशुओं की गौशाला उनके लिये आरामदायक आसानी से साफ करने योग्य और उसकी संरचना आवश्यकतानुसार आसानी से परिवर्तन योग्य हो जिससे सर्दियों में पशुओं को ठंडी हवाओं से बचाया जा सके तथा गर्मियों में उपयुक्त हवादार हो।

* पशुओं को ठंडे तथा नमीयुक्त फर्श के संपर्क में आने से बचाना चाहिए ऐसा पक्के फर्श पर पुआल, रेत इत्यादि डालकर किया जा सकता है।
* पशुशाला हवादार हो लेकिन गर्मियों में गर्म हवा और तूफान से बचाव की सुविधा होनी चाहिए।
* गौशाला की फर्श और दीवारें, दरारों और छिद्रों से मुक्त हो क्योंकि ऐसे स्थान जीवाणुओं के पनपने के लिये उपयुक्त होते हैं।
* फर्श पक्का, नमी रहित, ढलाव युक्त, न फिसलने वाला और आसानी से साफ करने योग्य हो।
* फर्श ढलावदार हो जिससे पानी, मलमूत्र की निकासी सुगमतापूर्वक हो सके।
* औसतन 40-50 वर्ग फुट प्रति पशु की दर से आवास व्यवस्था होनी चाहिए।
* स्वच्छ पीने के पानी की व्यवस्था, पशु तथा परिवेश को साफ रखने के लिएअत्यावश्यक है।
* चारा मशीन व दूध दूहने की मशीन इत्यादि यंत्रों को उपयोग में लाने के लिए बिजली की उचित व्यवस्था आवश्यक है।

CHANDAN ARA

(ख) साफ बर्तन

* दूध दुहे जाने वाले बर्तनों की पूरी तरह से सफाई और निर्जीवीकरण करना चाहिए।
* दूध निकालने वाले बर्तनों का ऊपर से खुला भाग कम चौड़ा तथा नीचे अधिक चौड़ा होना चाहिए जिससे दूध में धूल व मिट्टी के कण कम से कम प्रवेश पा सकें।
* बर्तन मानक गुणवत्ता युक्त पदार्थो से बने हुए होने चाहिए जिस पर सफाई और निर्जीवीकरण हेतु उपयोग होने वाले विभिन्न रसायनिक घोलों का कोई प्रतिकूल प्रभाव न पड़े।
* बर्तनों के आकार में कोई विकार न हो, जंग से युक्त न हों, दूध दुहने के बाद बर्तनों की भली-भांति सफाई सुनिश्चित करें और ऐसे स्थान पर भण्डारण करें जहां मक्खियों, कीटों, धूल और चूहों इत्यादि से दूषित होने की संभावनाएं नगण्य हो।

* दूध को ढके हुए स्टील के बर्तन में जल्दी ही समिति तक पहुँचाया जाये तो दूध की गुणवत्ता अधिक समय तक बनी रहती है।

** दूध की गुणवत्ता बनाये रखने के लिए पशु, पशुघर, पशुपालक, दूध रखने के बर्तन वगैरह की साफ-सफाई पर ज्यादा ध्यान देना ज़रूरी है। साथ-साथ दुहने के बाद जल्दी दूध को समितितक पहुँचाना चाहिए। यदि इन बातों का ध्यान न रखा जाये तो दूध में सूक्ष्म जीवों की संख्या बढ़ जाती है और दूध खराब हो जाता है

(ग) साफ जानवर

* दुहने से पहले थनों को अच्छी प्रकार से साफ पानी से धोना चाहिए एवं सर्दी के मौसम में गर्म पानी का उपयोग करना चाहिए।
* इसके अतिरिक्त धूलकण, गोबर और टूटे बालों को साफ करने के लिए पशु को दुहने से पहले खुरेरा करना चाहिए।
* शोधों के आधार पर ऐसा पाया गया है कि यदि दुहने से पूर्व थनों को क्लोरीन के घोल से साफ किया जाए, सूखे तौलिये से पोंछा जाए और थनों को आयोडोफोर के घोल में डुबोया जाए तो दूध में सूक्ष्म जीवों और दैहिक कोशिकाओं की संख्या में भारी कमी की जा सकती है।
* अगर हो सके तो दुहने के समय पूंछ को पिछले पैरों के साथ बांध देना चाहिए।

(घ) स्वस्थ पशु

* पशु पालक इस बात को सुनिश्चित करें कि पशु संक्रामक रोग जैसे ब्रूसेलोसिस, टी0बी0 तथा अन्य बीमारियों से ग्रसित न हो।
* पशु के थनों की रोजाना जांच करनी चाहिए। अगर उनमें कोई घाव हो तो उस पर एन्टीसेप्टिक क्रीम लगानी चाहिए।
* यदि थनों पर सूजन हो या दूध में खून या छेछड़े आ रहे हो तो पशु को थनैला रोग हो सकता है। ऐसे पशु का दूध मानव उपयोग के लिय हानिकारक हो सकता है।

*ध्यान रखना चाहिए कि थनों में ज़रा भी दूध न बचा रहे क्योंकि उससे थन में जीवाणु तेज़ी से बढ़ते हैं। इससे पशु को रोग होने की संभावना बढ़ जाती है।

(ङ) स्वच्छ दुहन

* दुहने से पूर्व हाथों को साबुन से भली-भांति धोना चाहिए।
* समय-समय पर हाथ के नाखून काटते रहना चाहिए।
* दुहने के समय अपने सिर को भी ढक कर रखना चाहिए ताकि बाल दूध में न गिरें।
* प्रत्येक दुहन के बाद थनों को सूखे तथा साफ कपड़े से पोंछना चाहिए।
* दुहन पूर्ण हस्तविधि द्वारा करना चाहिए।
* अंगूठे द्वारा दुहन करने से थनों में चोट लगने का भय रहता है।

(च) ग्वाला और उसका स्वास्थ्य

अस्वस्थ और अस्वच्छ ग्वाला, पशु तथा दूध दोनों के लिये सूक्ष्मजैविक संक्रमण का कारण बन सकता है। इसलिये निम्नलिखित बातों पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

* ग्वाला अस्वस्थ व अस्वच्छ न हो अन्यथा रोगाणुओं के फैलने का भय बना रहता है।
* ग्वाले के वस्त्र स्वच्छ एवं कसे होने चाहिए।
* हाथों के नाखून कटे हो तथा पशु को दुहने से पहले व बाद में किसी निर्जीविकरण रसायन के घोल से अच्छी तरह से हाथ साफ कर लेना आवश्यक है।
* दूध दोहन के समय खांसे और थूके नहीं। सिर व मुँह को किसी साफ कपड़े से ढकना उचित रहता है।
* दूध प्रवीणता पूर्वक व पूर्णता से दुहें। थनों को खीचने की अपेक्षा हल्के से दबायें। संपूर्ण हथेली विधि पशु के थानों के स्वास्थ्य के लिये अधिक लाभकारी है।

*अगर दूध दुहने वाला बीमार है, तो उसकी बीमारी का असर दूध पर भी होता है। इसलिए अगर किसी को सर्दी, खांसी, दस्त, क्षयरोग, चमड़ी का रोग या छूत की ~~बीमारी~~ बीमारी हो या उसके लक्षण हों तो उसे दूध नहीं दुहना चाहिए।

*दूध दुहते समय दुहने वाले को और आस-पास के लोगों को खांसना या छींकना नहीं चाहिए। इस दौरान वहाँ पान, तंबाकू, बीड़ी, पान-मसाला इत्यादि का सेवन भी नहीं करना चाहिए।

*दूध दुहते समय अपने शरीर का कोई अंग या कपड़ा, दूध व दूध के बर्तन से नहीं लगने देना चाहिए।

*दूध दुहने से पहले हाथों को साबुन से धो लेना चाहिए।

(छ) स्वच्छ दूध संग्रह

* एल्यूमीनियम या स्टेनलैस स्टील के बर्तन, दुग्ध संग्रह तथा लाने-ले जाने के लिये

अच्छे होते हैं। जंग लगी होने या टिन के बर्तन प्रयोग नहीं करनी चाहिए। दूध को हमेशा कपड़े से ढक्कर रखना चाहिए ताकि उसमें धूल या मक्खी आदि न गिरें।

* दूध को सीधे धूप में नहीं रखना चाहिए अन्यथा कुछ विटामिन नष्ट होने का खतरा बना रहता है।

* दूध के खाली बर्तनों को साफ पानी से तुरन्त ही धो देना चाहिए।

(ज) पशु आहार व्यवस्था

* अधिक और उत्तम दूध उत्पादन के लिये पशु आहार पौष्टिकता और वैज्ञानिक दृष्टि से संपूर्ण होना आवश्यक है।

* आहार, दूध के अम्ल/क्षार अनुपात को प्रभावित करता है। चारे वाली फसलों पर अत्याधिक कीटनाशक व खरपतवार नाशक रसायनों का प्रयोग अवांछनीय है क्योंकि

ऐसे रसायनिक पदार्थ आहार के माध्यम से पशु के शरीर में प्रवेश करते हैं और दूध का अभिन्न अंग बन जाते हैं। ये पदार्थ स्वास्थ्य के लिये अत्यंत हानिकारक हैं और दूध को भोजन हेतु अस्वीकार्य बना देते हैं।

CHANDAN ARA

पशुपालन में ध्यान देने योग्य बातें

अपने दुधारु पशुओं का सन्तुलित आहार कैसे बनायें?

प्रत्येक दुधारू पशु को 20 से 25 किलो हरा चारा और 3 से 5 किलो सूखा चारा प्रतिदिन दें। इसके साथ निर्धारित मात्रा में पुश आहार/दाना भी दें।

पानी

प्रत्येक पशु को स्वच्छ पानी पिलाये। गाय को औसतन 45 लीटर और भैंस को 65 लीटर प्रतिदिन पानी की जरूरत होती है।

बीमार पशुओं को कैसे पहचानें?

1. जुगाली नहीं करना
2. चलने में या खड़े रहने में मुश्किल
3. दूध उत्पादन का घट जाना
4. .दाना/चारा छोड़ देना
5. मुँह से साँस लेना
6. खाँसना
7. रंभाना

बछड़ों का रख-रखाव कैसे करें?

- नवजात बछड़ों का विशेष ध्यान रखें।
- नवजात बछड़े को प्रथम दूध (फेनुस/खिरसा) पहले छः घंटे तक अधिक से अधिक पीने
  देना चाहिए।
- प्रथम दूध बछड़े की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है।
- नवजात बछड़ों को पहले दो महीने अलग से स्वच्छ, सूखे और हवादार स्थान में रखें।
- नवजात बछड़ों को पहले दो महीने तक अत्यधिक गर्मी, अत्यधिक ठंडी या बरसात से बचाएँ।

CHANDAN ARA

स्वच्छ दूध उत्पादन।

साफ-सुथरा और निरोगी पशु

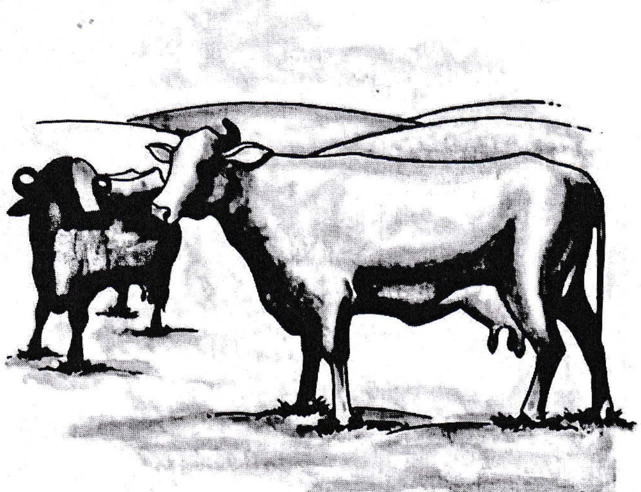

(१)

पशु रखने की साफ-सुथरी जगह

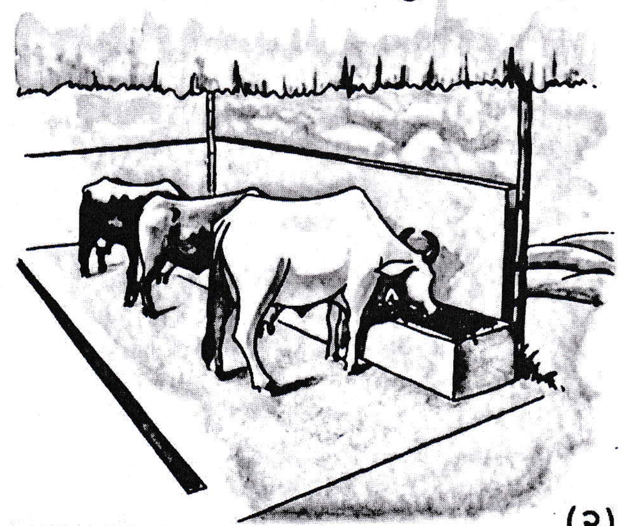

(२)

साफ पीने का पानी

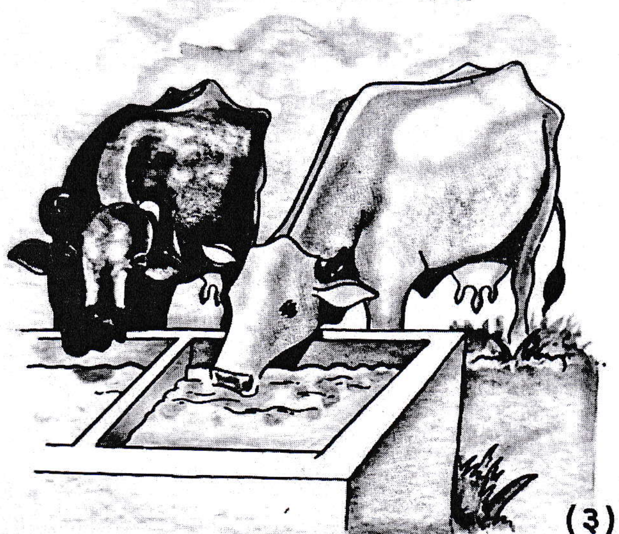

(३)

साफ-सुथरे स्टेनलेस स्टील के बर्तन

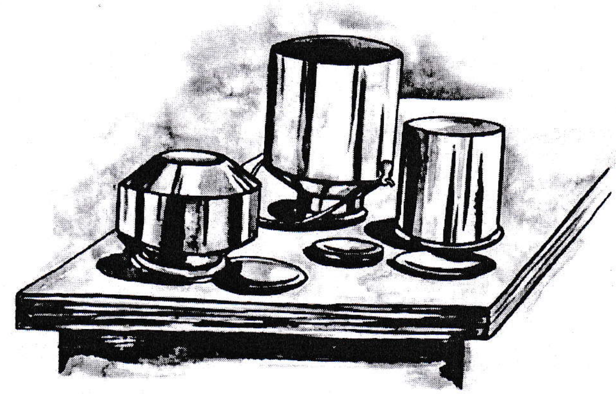

(४)

दूध दुहने से पहले हाथों को
साबुन से धो लेना चाहिये

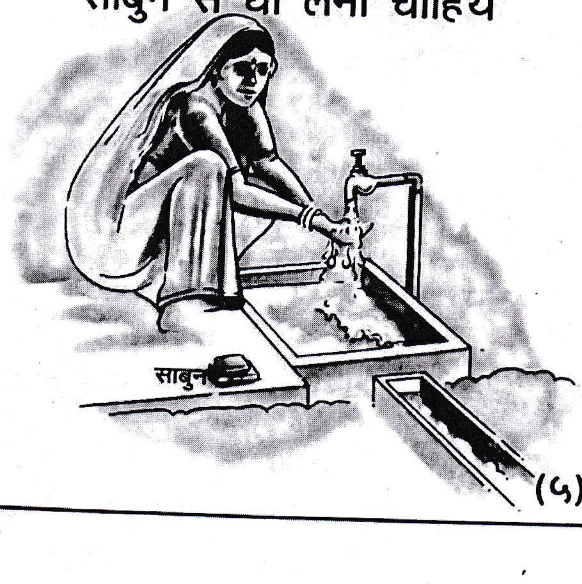

(५)

थनों को साफ पानी से धोकर साफ
धुले हुए कपड़े से सुखाना चाहिये

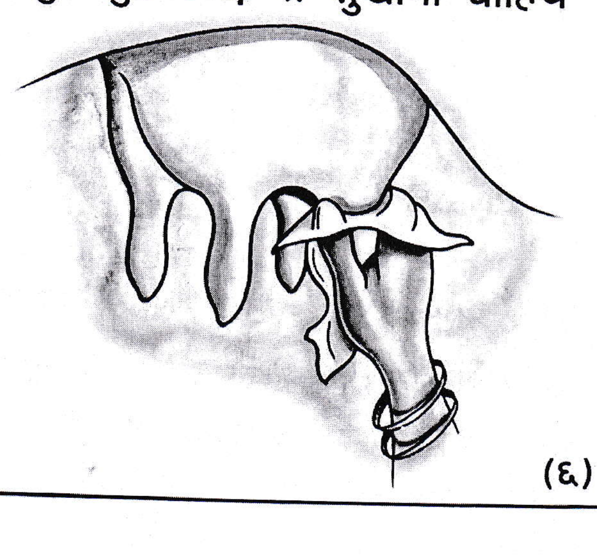

(६)

दुहने से पहले हर थन से
एक-दो धार दूध
निकाल कर फेंक देना चाहिये

(७)

साफ-सुथरे और निरोगी
दूध दुहने वाले

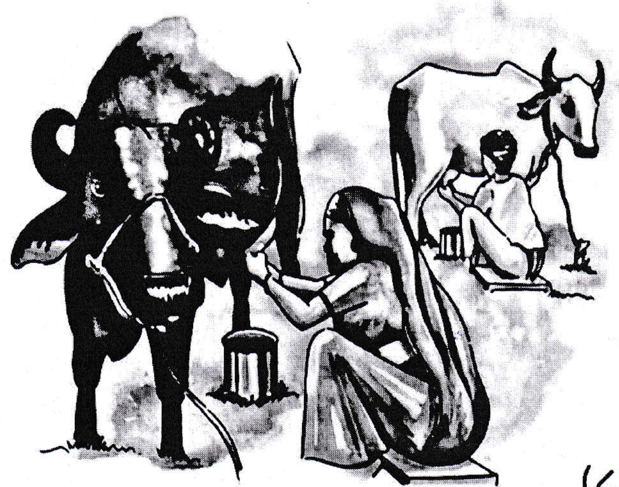

(८)

दूध देते पशु को हरा चारा खिलाएँ

(९)

दुहने के बाद थनों को साफ पानी से
धोना चाहिये और जीवाणुनाशक घोल में
डुबोना या उन पर घोल छिड़कना चाहिये

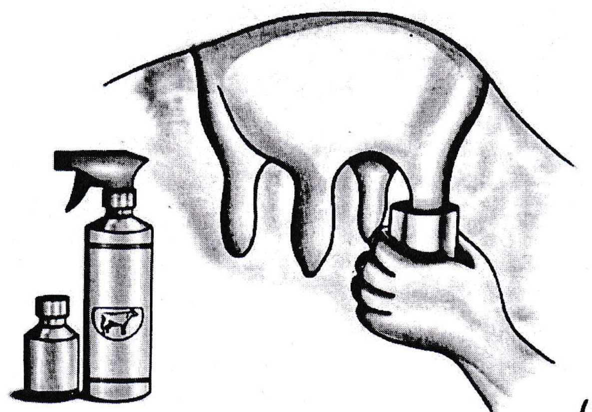

जीवाणुनाशक स्प्रे और घोल

(१०)

समिति तक दूध ढककर जल्दी
पहुँचाना चाहिये

(११)

दूध को जल्दी ठंडा करने की मशीन

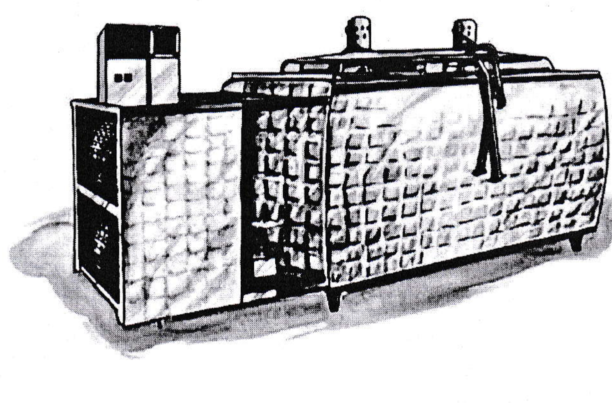

(१२)